Dr. Raj Gopal.
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.

## व्याप्ति व्याख्यान-1

व्याप्ति का अर्थ है हेतु और साध्य का व्यापक संबंध। हेतु और साध्य के बीच अनौपाधिक नियत साहचर्य संबंध को व्याप्ति कहते हैं। व्याप्ति अनुमान का 'प्राण' 'नाड़ी' है। व्याप्ति ही अनुमान प्रमाण से प्राप्त ज्ञान की प्रमाणिकता का निर्णायक है। अनुमान प्रमाण को मानने वाले सभी दार्शनिक व्याप्ति को अनुमान का आधार मानते हैं। परन्तु अनुमान के समर्थकों में व्याप्ति की परिभाषा, स्वरूप, प्रकार और व्याप्ति-ग्रहण की विधियों को लेकर मतांतर प्रचलित है।

'व्याप्ति' शब्द की उत्पत्ति 'वि+आप्ति' के योग से हुआ है। यहाँ 'वि' का अर्थ है 'विशिष्ट' और 'आप्त' का अर्थ है संबंध। दो वस्तुओं का सर्वदा एक साथ रहना या नियत साहचर्य संबंध ही दो वस्तुओं का विशिष्ट संबंध है। इस प्रकार से दो वस्तुओं के नियत साहचर्य संबंध को विशिष्ट संबंध कहा जाता है। केवल नियत साहचर्य संबंध को व्याप्ति नहीं कहा जा सकता है। मेढ़क और जल में नियत साहचर्य तो है लेकिन इसे व्याप्ति संबंध नहीं कह सकते हैं। व्याप्ति अटल नियत साहचर्य संबंध है जो अव्यभिचारी है, अर्थात् इसका अपवाद नहीं पाया जा सकता है। जैसे धुआँ और अग्नि का संबंध। इस प्रकार से हेतु और साध्य के व्यभिचारशून्य नियत साहचर्य संबंध को व्याप्ति कहते हैं।

न्यायशास्त्र में व्याप्ति का ग्रहण चिंतन के उपरांत भी कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दे पाते हैं। नैय्यायिक यह स्वीकार करते हैं कि व्याप्ति हेतु का साध्य के साथ स्वाभाविक उपाधिरहित संबंध है। जैसे धुआँ का अग्नि के साथ संबंध है पर स्वाभाविक है साथ ही यह संबंध उपाधिरहित भी है क्योंकि जहाँ धुआँ रहेगा वहाँ आग भी रहेगा। अग्नि के अभाव में धुआँ की उपस्थिति असंभव है। इसलिए धुआँ और आग में व्याप्ति का संबंध है। इस संबंध के कारण ही धुआँ को अग्नी का लिंग हेतु या चिन्ह कहा जाता है। इसके विपरीत अग्नि धुआँ का हेतु या चिन्ह नहीं है क्योंकि अग्नि की उपस्थिति से धुआँ की उपस्थिति प्रमाणित नहीं होती है। जैसे तप्त लोहे में अग्नि उपस्थित रहने पर भी धुआँ अंकित नहीं होता है। इस प्रकार से जहाँ जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ आग है। तो व्याप्ति है लेकिन जहाँ जहाँ आग है वहाँ-वहाँ धुआँ है व्याप्ति नहीं है। इनमें से पहला वाक्य निरुपाधिक है लेकिन दूसरा वाक्य निरुपाधिक नहीं है।

यहाँ उपाधि से तात्पर्य सामान्य रूप से साध्य के साथ सर्वत्र उपलब्ध और साधन के साथ कदाचित अनुपलब्ध और कदाचित उपलब्ध। जैसे धुआँ के साध्य और अग्नि को साधन अथवा हेतु मानकर किये जाने वाले अनुमान में धुम्र और अग्नि के बीच व्याप्ति संबंध संभव नहीं है क्योंकि अग्नि के साथ धुआँ सदैव उपस्थित नहीं रहता है वह उपस्थिति एक अन्य उपाधि ईंधन के गीलेपन पर आश्रित होती है।